भजन

तर्ज–तोरा मन दर्पण कहलाये

तोरी विरहानियां घबराये
वाला जी के विरह रस में अंग अंग भीगा जाये

1–अपनी जान के आप जगाई,दई अपनी पहचान
ना जाने क्यूं अरवाह उड़ी ना,निकस गये ना प्राण
तुमने जैसा चाहा पिया जी,वैसा होता जाये
जो चाहोगे होगा वो ही,हमरा कुछ ना बसाये

2–अवगुण मेरे चित ना राखो,अवगुण मेरे अपार
पिउ जी तुम्हारे बिन ये अंगना,किसको करे पुकार
व्याकुल आतम भई रे वल्लभा,ये संसार ना भाये
पिऊ बिना यहां जो पल बीता,वृथा ही बीता जाये

3–शीतल नैना मेह बरसा के,विरह अगन बुझाओ
ततखिन पिऊ जी करिये समागम,अंन्तर ये विसराओ
दुख भंजन पिया दुख से काढ़ो,मीठे बैन सुनाए
अंगनाओ को अंग लगाओ,करूं गुझ बीतक आये